जनवरी 2019

शनिवार 5

डॉ० कविता कुमारी सिंह
'हिन्दी - विभाग'

P.G. II sem

आधुनिक काल — हिन्दी साहित्येतिहास का अंतिम कालखण्ड आधुनिक काल के नाम जाना जाता है। आधुनिक शब्द दो अर्थों को अपने में लपेटे हुए है। एक है मध्यकाल से भिन्नता और दूसरा है इहलौकिक दृष्टिकोण। मध्यकाल अपने अवरोध, जड़ता और रूढ़िवादिता के कारण स्थिर और रूढ़ हो चुका था। 1857 का विद्रोह मध्ययुग की जड़ता की समाप्ति और आधुनिक युग के आरम्भ का उद्घोष था। सामन्तवादी शक्तियाँ अपनी सारी शक्ति

रविवार 6

लगाकर समाप्त हो गईं और देश के प्रबुद्ध वर्ग ने नये सिरे से सोचना आरम्भ किया। इसी प्रकार रीतिकाल में साहित्य अपने काव्य और शैली की दृष्टि से रूढ़ हो चुका था। आधुनिक काल ने इस जड़ता को खंडित किया और जीवन की धारा विविध स्त्रोतों में फूट निकली। साहित्य मनुष्य के सुख-दुःख के साथ जुड़ गया।

आधुनिक युग में सोचने-विचार का दृष्टिकोण सांसारिक हो गया और धर्म, दर्शन, साहित्य, चित्र आदि के प्रति

जनवरी 2019

7 सोमवार

नया दृष्टिकोण सामने आया। इस काल में सुधार, परिष्कार और अतीत की व्याख्या नये ढंग से की गई। इस ऐतिहासिक प्रक्रिया में साहित्य की भाषा भी बदली और ब्रजभाषा का स्थान खड़ी-बोली ने ले लिया।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने आधुनिक काल को गद्य और काव्य को दो खण्डों में बाँट दिया। दोनों खण्डों को पुनः दो प्रकरणों में बाँटा गया। ~~गद्य~~ के पहले प्रकरण में ब्रजभाषा और खड़ीबोली का विवेचन किया गया और दूसरे खण्ड में

8 मंगलवार

गद्य साहित्य का उद्भव लिखित किया गया। इसे फिर तीन उत्थानों प्रथम, द्वितीय और तृतीय में विभाजित किया गया है। काव्य-खण्ड में भी दो प्रकरण है — पुरानी और नयी काव्यधारा। गद्य खण्ड की तरह इसमें भी नयी काव्य-धारा की तीन उत्थान है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के इस विभाजन में एकरूपता और समानता का अभाव है। ये खण्ड एकदूसरे से अलग प्रतीत होते है।

उदाहरणार्थ काव्य-खण्ड के दूसरे प्रकरण के तृतीय उत्थान (छायावाद) तथा गद्यखण्ड के द्वितीय प्रकरण के तृतीय उत्थान में एकरूपता नहीं है)
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने उस कालखण्ड को "गद्यखण्ड" कहा है। यह सही है कि आधुनिक ~~तकनीकों~~ तकनीकों के कारण उस युग में गद्य साहित्य तेजी से विकसित हुआ और खासकर प्रेस ने साहित्य को प्रजातांत्रिक रूप दिया। समाचार पत्र, उपन्यास, आधुनिक ढंग के निबन्ध, कहानियाँ, प्रेस के प्रचार के बाद ही तेजी से आगे बढ़ीं। पर उस युग का नाम अगर "गद्य काल" रख दिया जाय, तो वह काव्य प्रवृत्ति बिलकुल छूट जायेगी, जो आधुनिक विचारों से ओत-प्रोत है। इसलिए हमें उस काल को आधुनिक काल नाम ही अधिक उचित प्रतीत होता है। आधुनिक काल को भी कई कालखण्डों में विभाजित किया जा सकता है, जैसे :—

गुरुवार 10

1. पुनर्जागरण काल — 1857–1900 ई०
2. जागरण सुधारकाल (द्विवेदीकाल) – 1900–1918
3. छायावाद काल — 1918–1936 ई०
4. छायावादोत्तर काल —

① <u>पुनर्जागरण काल</u> (भारतेन्दु काल)

1857 से 1900 तक के काल को पुनर्जागरण काल या भारतेन्दु काल के नाम से जाना जाता है। दोनों ही नाम हिन्दी साहित्य के इतिहास में प्रचलित होते हैं। यह काल राष्ट्रीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण का समय है। ~~[illegible]~~ राजा राममोहन राय, केशव चंद्र सेन, दयानन्द सरस्वती, विवेकानन्द आदि के कारण एक नयी राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना का जन्म हुआ। इसका सीधा प्रभाव साहित्य पर पड़ा। साहित्य नये दृष्टिकोण से संपृक्त

हुआ और मध्यकालीन जड़ता को उसने पूरी तरह तोड़ दिया। इस दृष्टि से इस काल खण्ड को पुनर्जागरण काल कहा जाता है।

नामकरण करते समय ऐसे व्यक्ति को आधार बनाया जाता है जिससे उस कालखण्ड का इतिहास प्रभावित हो। इस कालखण्ड में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पूरे हिन्दी-साहित्य पर छाये रहे। उन्होंने हिन्दी गद्य को भाषा और विषय की दृष्टि से एक नयी दिशा दी। मध्यकालीन वातावरण से जीवन और साहित्य को निकालकर उन्हें आधुनिक रूप प्रदान करने की उन्होंने सतत चेष्टा की। भाषा, भाव, साहित्यिक

अतिरिक्त इस काल में राष्ट्रीय - सांस्कृतिक स्तर पर भी जागरण सुधार की दिशा में प्रगति हुई। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में समाज और संस्कृति को पुनरुत्थान की जो प्रक्रिया आरम्भ हुई, उसे आलोच्य काल में बाल गंगाधर तिलक, गोपाल कृष्ण गोखले, लाला लाजपतराय आदि नेताओं ने आगे बढ़ाया और अपनी परम्परा और संस्कृति को गौरव प्रदान करने की चेष्टा की। इसका भी असर साहित्य पर पड़ा। इस दृष्टि से इस काल को "जागरण सुधार काल" कहा जाता है।

(3) <u>छायावादी काल</u> - 1918-1936

द्विवेदी युग के बाद का समय छायावाद काल के नाम से जाना जाता है। छायावाद

आधुनिक हिन्दी कविता की उस धारा का नाम है, जो 1918 ई० के बाद प्रस्फुटित हुआ। नामवर सिंह के अनुसार "छायावाद विशेष रूप से हिन्दी साहित्य के "रोमांटिक" उत्थान की वह काव्यधारा है, जो लगभग सन् 1918 - 1936 तक की प्रमुख युगवाणी रही। जिसमें प्रसाद, निराला, पंत, महादेवी आदि मुख्य कवि हुए और सामान्य रूप से भावोच्छवास - प्रेरित स्वच्छन्द - कल्पना - प्रवृति की वह धारा है जो देश - काल - गत - वैशिष्ट्य के साथ संसार की सभी जातियों के विभिन्न उत्थानशील युगों की आशा - आकांक्षा में निरन्तर व्यक्त होती जा रही है। स्वच्छन्दता की उस सामान्य भाव - धारा की विशेष अभिव्यक्ति का नाम हिन्दी - साहित्य में छायावाद पड़ा।"

रूप आदि की दृष्टि से उन्होंने गद्य और काव्य दोनों में हिन्दी-भाषियों का नेतृत्व किया। उनके व्यक्तित्व का प्रतिबिम्ब अन्य कवियों और लेखकों की रचनाओं में बराबर मिलता है। अतः इस काल का नामकरण "भारतेन्दु काल" उपयुक्त है।

(2) जागरण सुधारकाल (द्विवेदी काल) 1900 - 1918

हिन्दी कविता को राष्ट्रीयता, प्रगति और स्वच्छन्दता में जोड़ने का प्रमुख कार्य इस काल में हुआ। इस युग का नामकरण महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर "द्विवेदी काल" किया गया है। 1903 में "सरस्वती" का सम्पादकत्व ग्रहण करने के बाद उन्होंने खड़ी बोली का परिष्कार आरम्भ किया। ~~उन्होंने अनेक कवियों और लेखकों का~~ मार्ग निर्देशन किया।

समकालीन कवियों और लेखकों पर उनकी अमिट छाप पड़ी। खुद द्विवेदी जी एक कुशल लेखक, समालोचक और सफल सम्पादक थे। जिस प्रकार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने हिन्दी भाषा और साहित्य को एक दिशा दिखाई, उसी प्रकार महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिन्दी भाषा का परिष्कार कर उसे एक मानक [illegible] किया। इन्हीं कारणों से इस काल को 'द्विवेदी युग' कहा जाता है।

राष्ट्रीय, सांस्कृतिक और साहित्यिक [illegible] पर इस काल को जागरण सुधार काल भी कहा जाता है। इस काल में साहित्य के रूप और भाषा में सुधार और परिष्कार हुआ। इसके

(4) <u>प्रगति - प्रयोग काल</u> — 1936 - 1953)

छायावाद युग के बाद 1936 के आसपास नवीन सामाजिक चेतना से युक्त जिस साहित्य-धारा का जन्म हुआ उसे प्रगतिवाद की संज्ञा दी गई है। प्रगतिशील साहित्य प्रोग्रेसिव लिटरेचर का हिन्दी अनुवाद है। अंग्रेजी साहित्य में इस शब्द का प्रचार 1935 ई० के आसपास हुआ। ~~अंग्रेजी साहित्यकार~~ ई. एम. फार्स्टर के नेतृत्व में पेरिस में "प्रोग्रेसिव राइटर्स ऐसोसिएशन" की स्थापना हुई। 1936 ई० में भारत में इसी तर्ज पर डॉ० मुल्कराज आनन्द और सज्जाद जहीर के सहयोग से प्रगतिशील लेखक संघ की ~~स्थापना~~ स्थापना हुई।

प्रयोगवाद का समय तारसप्तक कविता संग्रह के प्रकाशन काल 1943 से माना जाता है।

प्रयोगवाद नाम चलने के कारण 'तारसप्तक' का संपादकीय है, जिसमें 'प्रयोग' और 'प्रयोगशीलता' की बार-बार चर्चा की गई है। इस नाम से तारसप्तक के संपादक अज्ञेय सहमत नहीं हैं। बल्कि उन्होंने दूसरा सप्तक (1951) की भूमिका में इसका विरोध भी किया। परन्तु जिस प्रकार छायावादियों के न चाहने पर भी छायावाद की संज्ञा चल पड़ी, उसी प्रकार प्रयोगवाद भी चल पड़ा।

(5) <u>नवलेखन काल</u> — 1953 से आगे

प्रयोगवाद के बाद हिन्दी साहित्य में कई प्रवृत्तियाँ उभरीं, यथार्थ के कई पहलू सामने आये। इसके अतिरिक्त यह साहित्य प्रवाह इतनी तेजी से प्रभावित हो रहा है कि यह सवाल बार-बार सामने आता है कि इसे किसी एक नाम में बाँधा जाय

(4) **प्रगति - प्रयोग काल** — 1936 - 1953)

छायावाद युग के बाद 1936 के आसपास नवीन सामाजिक चेतना से युक्त जिस साहित्य-धारा का जन्म हुआ उसे प्रगतिवाद की संज्ञा दी गई है। प्रगतिशील साहित्य प्रोग्रेसिव लिटरेचर का हिन्दी अनुवाद है। अंग्रेजी साहित्य में इस शब्द का प्रचार 1935 ई० के आसपास हुआ। ~~अंग्रेजी साहित्य~~ ई. एम. फार्स्टर के नेतृत्व में पेरिस में "प्रोग्रेसिव राइटर्स एसोसिएशन" की स्थापना हुई। 1936 ई० में भारत में उसी तर्ज पर डॉ० मुल्कराज आनन्द और सज्जाद जहीर के सहयोग से प्रगतिशील लेखक संघ की ~~स्थापना~~ स्थापना हुई।

प्रयोगवाद का समय तारसप्तक कविता संग्रह के प्रकाशन काल 1943 से माना जाता है।

प्रयोगवाद नाम चलने के कारण 'तारसप्तक' का संपादकीय है, जिसमें 'प्रयोग' और 'प्रयोगशीलता' की बार-बार चर्चा की गई है। इस नाम से तारसप्तक के संपादक अज्ञेय सहमत नहीं हैं। बल्कि उन्होंने दूसरा सप्तक (1951) की भूमिका में इसका विरोध भी किया। परन्तु जिस प्रकार छायावादियों के न चाहने पर भी, छायावाद की संज्ञा चल पड़ी, उसी प्रकार प्रयोगवाद भी चल पड़ा

(5) **नवलेखन काल** — 1953 से आगे

प्रयोगवाद के बाद हिन्दी साहित्य में कई प्रवृत्तियाँ उभरीं, यथार्थ के कई पहलू सामने आये। इसके अतिरिक्त यह साहित्य प्रवाह इतनी तेजी से प्रभावित हो रहा है कि यह सवाल बार-बार सामने आता है कि इसे किसी एक नाम में बाँधा जाय